International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2024; 1(4): 58-60
© 2024 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 15-10-2024
Accepted: 25-10-2024
Publish : 28-10-2024

डॉ० राका शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
एन. के. बी. एम. जी. कॉलेज,
चंदौली।

Correspondence:
डॉ० राका शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
एन. के. बी. एम. जी. कॉलेज,
चंदौली।

रामानन्ददिग्विजय महाकाव्य में "वैष्णव सम्बन्धी जीवनचर्या"

डॉ० राका शर्मा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20379050

वैष्णव जनों को उचित है कि धर्मात्म गुरू में और भगवान् में तीव्र भक्तियोग करें। अन्य वैष्णवों के साथ नम्रभाव से व्यवहार करें। अनादर युक्त वचनों से कभी भी इन्हें नहीं बुलाना चाहिए-

श्रीमद्गुरो च भगवत्यतितीप्रभक्तियोगं च वैष्णवजनेषु विनम्रभावम्
संस्थापयेत्स्वमनति स्वहिताभिलाषी, नानादरात्मकवयोभिरिमे हि योज्याः।।[1]

जिनके हृदय में भगवत्पदारविन्द विराजमान हों, उनके समीप जाकर ज्ञान को नित्य ग्रहण करना चाहिए-

येषां मनः सरसिजे भगवत्पदाब्जद्वन्द्वं समुल्लसति सर्वशिवप्रदायम् ।
तेषां सभीपमभिगम्य बुधाः सुबोध, गृहणन्तु नित्यमखिलान्घतमीदिनेशम् ।।[2]

विष्णु भक्तों को चाहिए कि गुरूओ के समक्ष किसी प्रकार की धृष्टता अथवा विवेकशून्य कोई भी कार्य न करें, ऐसी वेदाज्ञा है-

पश्यत्सु सत्सु गुरूषुश्रितविष्णुपादेर्घाष्ट्यं विवेधविकलं किमपीह कार्यम् ।
कायर्य न कैश्चिदपि धर्मधुरीणदिष्टतन्मार्गमीप्सुभिरिति श्रुतिचोदनास्ति ।।[3]

श्री विष्णु भगवान् का साधु पुरूष का वैराग्यवान् सज्जनों का जब-जब दर्शन हो तब-तब हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर प्रेम सहित सादर प्रणाम करना चाहिए-

विष्णोः सतां विरतिराज्यजुषां च साधोः, स्युदर्शनानि सुखदानि यदा यदैव ।
बद्ध्वांजलिं च विनमय्य निजोत्तमाङ्गं, भव्याः तदा नतिततीस्तनुतैव तेषु ।।[4]

नौका, रथ, हाथी और काष्ठासन के अतिरिक्त गुरू के साथ एकासन पर कभी नहीं बैठना चाहिए। आचार्य भगवत् स्वरूप होने से वह परात्पर देव है। अतः अपने आचार्य गुरू को सदा प्रसन्न रखना चाहिए-

एकासने स्वगुरूभिनं समासनीय, नावं रथं गजमघाश्म विहाय काष्टम् ।
आचार्य एवं परतोस्ति परोऽस्ति देवस्तस्मात्प्रसादयत तं सततं शिवाय ।।[5]

मैं ही बलवान हूँ, मैं ही महान समर्थ हूँ, मैं ही विद्वान हूँ, में ही धनवान हूँ। इस प्रकार से उन्नतिनाशक अहंकार छोड़ देना चाहिए।

ऊर्जस्वलोऽहमहमेव महान्तत्समर्थी, विद्वानहं द्रविणवाहमेव चात्र ।
एतादृशी निजसमृद्धिविकाशयित्री, त्याज्या प्रयत्नपटलैः सुनरैरहन्ता ।।[6]

जो मित्र के साथ द्रोह करने वाले हैं, गुरूओं से विरोध करते रहते हैं, दूसरे के सुन्दर गुणों में दोष देखते हैं, भ्रूण हत्या करते हैं ऐसे नारकी लोगों का शीघ्र ही त्याग कर देना चाहिए-

मित्रद्रु हो गुरुविरोधपरा नरा ये, ये चापरस्य सुगुणेष्वपि दृष्टदोषाः ।
ये भ्रूणहिंसनविधो परमं सुदक्षा, हेयाश्च ते सपदि नारकिणः सदैव ।।[7]

जो वस्तु भगवान् के सन्मुख नैवेद्य में न रखी जा सके, उस वस्तु का वैष्णवों को कभी भी ग्रहण नहीं करना चाहिए। अतः अफीम, भांग, आदि प्रत्येक वस्तु भगवान् के अग्राह्य होने से वैष्णवों के लिए अत्यन्त अग्राह्य है-

यदस्तुजातमिह विष्णुपदेऽनिवेद्यं ग्राह्यं भवेन्न हि कदाचन वैष्णवैस्तत्।
तेनाहिफेनविजयादिकमादकानि वस्तूनि हेयपदवीं सुतरां गतानि ।।[8]

जहां भगवान् की आरती होती है, वहां सबको खड़ा हो जाना चाहिए भगवान् के चरण कमलो का ध्यान रखना चाहिए। पश्चात् साष्टाङ्कंग प्रणाम करके स्वस्वकार्य करना चाहिये-

आरात्रिकं भवति यत्र हरेस्तु तत्र, व्युत्थनमेव हरिभक्तजनैविधियम् ।
ध्येयं च विष्णुपदकंजयुगं मनोज्ञमन्ते प्रणत्य विरमेपुरपेतदोषाः ।।[9]

"भस्मानां शरीरम्" इस यजुर्वेद के चयन के अनुसार यह शरीर जब निष्प्राण हो जावे तो उसे अवश्य भस्म कर देना चाहिए। पृथ्वी में भी नहीं गाड़ना चाहिए, वन व जल में भी नहीं फेंकना चाहिए-

भस्मान्तमित्यधिवचः श्रुतिसम्मतं-
यत्तस्माच्छरीरमिदमत्र यदा व्यसु स्यात्।
भस्मावशेषमखिलेः करणीयमेव,
नास्यं तदप्सु न वने न च भूमिगमें ।।[10]

भगवान् के ऐकान्तिक भक्तों को चाहिए कि मान और अपमान के विषय में समता धारण किये रहें। जो सत्य वस्तु हो उसे कभी छिपाना नहीं चाहिए, तथा प्राण संकट में भी और मानभंग के भय से भी असत्य नहीं बोलना चाहिए-

मानापमानविषये समता समन्ताच्छीवैष्णैवहरिपदाब्जरतै-
रूपास्या श्रेयोभिलाषिभिरसुव्यसनागमेऽपि,
मानाभिभङ्गभयतोऽपि मृषा न वाच्यम् ।।[11]

विरक्त पुरूषों को चाहिए कि स्त्रियों के पहने हुए वस्त्रों तथा आभूषणों का स्पर्श न करें तथा स्त्रियों के साथ एकान्त में न बैठे और न कभी बात करें-

स्त्रीभिर्धृतानि वसनानि च भूषणानि,
स्पृश्यानि नैंव मतिमद्भिरपेतरागैः ।
नास्यं सह क्वचन ताभिरयोरहो वा,
तद्वाचया न वचनं परिमिश्रयेयुः ।।[12]

भजन जप और होम के समय किसी के साथ कोई अन्य वार्तालाप न करें। यदि वार्तालाप बहुत आवश्यक हो तो तीन बार आचमन करके कार्य के अनुसार वार्ता करें। विशेष नहीं-

होमे जपे हरिपदस्मरणं व्रते वा,
देवार्चने हरिजना न तमालपेयुः
आवश्यकं यदि भवेत्परमं सदा-
भिराचम्य कार्यपमधिकृत्य वंदेयतात्मा ।।[13]

आचार और सद्विचार ये दोनो वेद प्रतिपादित धर्म हैं आचार- स्नान शोध आदि से बाह्य इन्द्रिय शुद्ध होते हैं और सद्विचार से बन्धका कारण मन शुद्ध होता है-

आचार एवं परमः श्रुतिसम्मतोऽस्ति,
धर्मो निरन्तरमथो हृदि सद्विचारः ।
पूर्वेण शुद्धयति बहि: करणव्रजोऽयं-
बन्धस्य हेतुरपरेण मनः क्रमेण ।।[14]

ऊर्ध्वपुण्ड्रतिलक, तप्तमुद्रा, भगवत्सम्बन्धी नाम, कण्ठी और राममंत्र को धारण करने वाले, सदाचारी भक्तों को सदापरोपकार परायण होना चहिए-

मालाभिधेयतिलकानि च तप्तमुद्रे, श्रीराममंत्रचरमद्वयमादधानेः ।
चारित्रभूषणविभूषितमानसाढयेर्भक्तैः परोपकृतिरत्नचयैर्हि भाव्यम् ।।[15]

भगवान् के मंदिर में रथादि पर चढ़कर अथवा पादुका पहनकर किसी को भी नहीं जाना चाहिए। मोक्षाभिलाषी हरिजनों को उचित है कि भगवान् के चारणों की पूजा करें-

यानेन विष्णुभवने गमनं न कार्य,
केश्चिद्विचारचतुरेर्न च पादुकाभ्याम् ।
देवोत्सवादिसमये प्रभुपादपूजा,
कायर्या सदैव परधामनिवासकामैः ।।[16]

भक्ति रूप सुन्दर रत्नों की किरणों से सुशोभित मनवाले पुरूषों को उचित है कि हरिजनों द्वारा पूजित भगवन्मूर्ति को देखकर तत्काल ही साष्टांग प्रणाम करें -

आसेवितां हरिजनै: प्रतिमां विलोक्य,
विष्णोः सपद्यधिघरं शिरसोरसा च ।
पद्युग्मबाहुयुगलेन च नम्रभावेस्त्रि-
र्दण्डवत्प्रणतयः सकलैविधियाः ।।[17]

मन्दिर में भगवत्सम्बन्धी चन्दनपुष्पादिकों स्नानादि किए बिना कोई मनुष्य स्पर्श न करे। एक हाथ से भगवान् को प्रणाम न करे, नम्र होकर भगवान की प्रदक्षिणा करे-

यन्मन्दिरे भवति चन्दनपत्रपुष्पं,
देवार्पितं स्पृशतु कोप्यशुचिनं तच्च ।
कायर्यो न हि प्रणतिरेककरेण विष्णो,
नम्रः परिक्रमणमीड्यतमस्य कुर्यात् ।।[18]

भगवान् के सम्मुख कभी भी पग फैलाकर बैठना उचित नहीं, क्योंकि इससे बन्धन प्राप्त होता है-

पादप्रसारणमनुष्य जगत्त्रयाधिनाथस्य
नो समुचितं पुरतः कदापि ।
पर्यङ. कबर्धनमथास्ति निबन्धनाय-
स्वस्यैव भव्यजनमण्डल तत्पुरस्तात् ।।[19]

भगवान् के समक्ष सोना, भोजन, उच्च स्वर से बोलना, मिथ्या भाषण, रोना, परस्पर वार्तालाप, युद्धादि, कठोर भाषण, अनुग्रह और दण्ड ये सब कार्य किसी को नहीं करना चाहिए-

स्वापं च जग्धिमथ ताररवेण वाद,
मिथ्योक्तिरोदन मिथोवदनाहृवादीन् ।
कूराभिभाषणमनुग्रहनिग्रहौ च,
मा मा समाचरतु कोऽपि हरेः समक्षम् ।।[20]

भगवान् के सम्मुख कालाकम्बलादि धारण, आत्मस्तुति, परनिन्दा भी नहीं करना चाहिए।

आवृत्य देहमभितोऽसितकम्बलेन,
गच्छेत्कदापि नहि कोपि हरेः पुरस्तात् ।
आत्मस्तुति च परदूषणभाषणादि,
मा संविधात् क्वचिदधोनिलमोक्षणं वा ।।[21]

भगवान् के सम्मुख अश्लील भाषण न करे। भगवान् को निवेदन किये बिना भोजन न करे। पाखण्डपूर्ण भक्ति न करे। सामयिक पुष्प और फल आदि के देने की कभी अनिच्छा न करे-

अश्लीलवाचमनिवेदितभोजनानि,
गौणोपचारमथ देवेपदेषु रून्ध्यात्
विष्णो च सामयिकपुष्पफलायदित्सा,
तन्यान्न कोपि परमार्थ रूचिर्जनोऽत्र ॥[22]

भगवान् के आगे भ्रम से भी जो पीठ करके बैठता है वह भी विवश होकर नरक गति को पाता है-

देवाधिदेवपुरतो भ्रमतोऽपि पृष्ठ,
कृत्वोपवेशनमशस्तमिति ब्रवार्णाम् ।
शास्त्रीयवैधवचनं हि तिरस्करोति,
या सोऽपि नैरयगतिं विवशः प्रयाति ।।[23]

पाद टिप्पणी –

1. रामानन्ददिग्विजय- 12/17
2. रामानन्ददिग्विजय- 12/18
3. रामानन्ददिग्विजय- 12/19
4. रामानन्ददिग्विजय- 12/20
5. रामानन्ददिग्विजय- 12/22
6. रामानन्ददिग्विजय- 12/23
7. रामानन्ददिग्विजय 12/26
8. रामानन्ददिग्विजय 12/27
9. रामानन्ददिग्विजय 12/28
10. रामानन्ददिग्विजय- 12/29
11. रामानन्ददिग्विजय- 12/30
12. रामानन्ददिग्विजय 12/31
13. रामानन्ददिग्विजय 12/35
14. रामानन्ददिग्विजय- 12/36
15. रामानन्ददिग्विजय 12/38
16. रामानन्ददिग्विजय 12/39
17. रामानन्ददिग्विजय 12/40
18. रामानन्ददिग्विजय-12/41
19. रामानन्ददिग्विजय- 12/42
20. रामानन्ददिग्विजय-12/43
21. रामानन्ददिग्विजय-12/44
22. रामानन्ददिग्विजय-12/45
23. रामानन्ददिग्विजय-12/47